मातृभूमि के लिए

उत्तर : डॉ० जयशंकर त्रिपाठी द्वारा रचित **'मातृभूमि के लिए'** खण्डकाव्य का सम्पूर्ण कथानक तीन सर्गों में विभाजित किया गया है। प्रस्तुत खण्डकाव्य में चन्द्रशेखर 'आजाद' के जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाओं का वर्णन किया गया है। संक्षेप में खण्डकाव्य की सर्गबद्ध कथा इस प्रकार है—

प्रथम सर्ग {संकल्प}

स्वाधीनता से पूर्व भारतवर्ष की इस पवित्र धरती पर अंग्रेजों का साम्राज्य था। ब्रिटिश शासन के अन्याय तथा हिंसक अत्याचारों से भारत की जनता कराह रही थी। देश के सभी उद्योग नष्ट कर दिए गए थे और किसानों को साधनहीन कर दिया गया था। राजवंशी भी अंग्रेजों के अनुयायी बनकर भोग-विलास में डूब गए थे। धीरे-धीरे भारतीयों में चेतना उत्पन्न हुई और भारत की जनता अपनी जन्मभूमि की रक्षा व भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए तैयार हो गई। प्रतिरोधस्वरूप ब्रिटिश शासन ने भारतीयों के विरुद्ध निर्ममतापूर्वक अपना दमन-चक्र चलाया। ब्रिटिशकाल के इसी दमन-चक्र के समय चन्द्रशेखर 'आजाद' का नाम प्रकाश में आया। चन्द्रशेखर 'आजाद' का जन्म झाबरा ग्राम में हुआ था। इस गाँव में मुसलमान और भील जातियाँ रहती थीं। ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ यह बालक काशी नगरी में विद्याध्ययन के लिए गया। छात्र चन्द्रशेखर 'आजाद' का हृदय अंग्रेजों के अत्याचारों से व्याकुल हो उठता था। इसी समय लन्दन में बैठे-बैठे ही मि० रौलेट ने हिन्दुस्तान को मिटाने के लिए 'रौलेट एक्ट' बना डाला। 'रौलेट एक्ट' के अनुसार राष्ट्रभक्तों पर राजद्रोह का अभियोग लगाकर दण्डित किया जाता था तथा इनकी जमानत के लिए कोई भी कानून नहीं बनाया गया था। इस प्रकार की कानूनी धारा को तोड़ने का सभी ने प्रण कर लिया। 'रौलेट एक्ट' का विरोध करने के लिए सभाएँ आयोजित की गईं। पंजाब में विद्रोह ने उग्र रूप धारण कर लिया था। सन् 1919 ई० के अप्रैल माह में वैशाखी का पर्व था। जनता में आक्रोश व्याप्त था। जलियाँवाला बाग की सभा में स्त्री, पुरुष व बच्चे सभी सम्मिलित थे। सभा में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भाषण हो रहे थे। इसी बीच जनरल डायर के आदेशानुसार जनसभा पर गोलियों की वर्षा होने लगी। फलस्वरूप अनेक नर-नारी सदैव के लिए मृत्यु की गोद में सो गए। अमृतसर का जलियाँवाला बाग रक्तरंजित हो गया। जनरल डायर को इतने से भी सन्तोष न हुआ। उसने कितने ही निरपराधियों को हथकड़ियाँ लगवा दीं।

द्वितीय सर्ग {संघर्ष}

आजाद सब बन्धनों से मुक्त होकर एक ही बन्धन में बँध गए थे और वह एकमात्र बन्धन था—राष्ट्रभक्ति का बन्धन। आजाद के शौर्य को देखकर प्रकृति भी उन पर मोहित हो गई। चन्द्रशेखर 'आजाद' ने युवकों में राष्ट्रीय चेतना की ज्वाला भड़का दी। जब असहयोग आन्दोलन का ज्वार देश में मन्द पड़ गया, तब ये सशस्त्र क्रान्ति की ओर मुड़ गए। इसके लिए इन्होंने पिस्तौल तथा बम का निर्माण कराया। इन वस्तुओं के लिए आजाद को धन की आवश्यकता पड़ी; अत: उन्होंने सरकारी माल तथा खजानों को लुटवा दिया। आजादी के युद्ध के लिए ड्राइवरी की आवश्यकता का अनुभव करते हुए इन्होंने मोटरगाड़ी की ड्राइवरी सीखी तथा धन के लिए एक मठाधीश के शिष्य बने। इन्होंने काकोरी में शासन का खजाना लूटा, जो एक साहसिक कदम था। इस काण्ड के दौरान **बिस्मिल** तथा **अशफाक** को फाँसी के फन्दे पर लटका दिया गया। **बख्शी** को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। पन्द्रह व्यक्तियों को तीन साल की कठोर जेल की सजा सुनाई गई। आजाद और भगतसिंह सरकार की आँखों से बच निकले। सन् 1928 ई० में 'साइमन कमीशन' झगड़ों की जाँच हेतु भारत आया। राष्ट्रीय स्वयंसेवकों ने 'साइमन कमीशन' के विरोध में आवाज उठाई, जिससे उन पर लाठियों से प्रहार किया गया। भारतीय जनता क्षुब्ध हो चुकी थी; अत: जहाँ पर भी 'साइमन कमीशन' पहुँचा, वहीं पर उसे जनता के बहिष्कार, आक्रोश तथा अवमानना का सामना करना पड़ा। लखनऊ में अंग्रेजों की लाठियों के प्रहार से जवाहरलाल नेहरू भी घायल हुए। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय काले झण्डों के साथ नारे लगा रहे थे। उन पर पुलिस अफसर **स्कॉट** ने निर्ममतापूर्वक लाठियों से प्रहार किए, जिससे घायलावस्था में ही कुछ दिन पश्चात् उनका देहावसान हो गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुनते ही सारे राष्ट्र में शोक व्याप्त हो गया। इस समय पूर्वी भारत में चन्द्रशेखर 'आजाद' क्रान्ति की ज्वाला दहका रहे थे तो पंजाब और दिल्ली में भगतसिंह।

चन्द्रशेखर 'आजाद' ने दिल्ली के फिरोजशाह मेले में क्रान्तिकारियों का सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में ब्रिटिश सरकार से लड़ने के लिए व्याकुल सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त, यतीन्द्र, सरदार भगतसिंह तथा राजगुरु आदि सभी देशभक्त आए। तभी 'सोशलिस्ट गणतन्त्र सैन्य' की स्थापना की गई। इसके सभी सदस्य सेनानी व्यक्ति थे। आजाद इस सेना के नायक थे। एक दिन लाहौर के पुलिस कार्यालय से एक गोरा ऑफिसर निकला, तभी सरदार भगतसिंह द्वारा गोलियों की वर्षा प्रारम्भ कर दी गई। वह ऑफिसर लहूलुहान हो मृत्यु को प्राप्त हो गया। एक पुलिसकर्मी ने भगतसिंह को देख लिया था, परन्तु आजाद ने उसे भी गोली का निशाना बना दिया। अंग्रेजी शासन इस घटना से भयभीत हुआ तथा उनके द्वारा सभा में **'जनता-रक्षा बिल'** लाने का प्रस्ताव रखा गया। विट्ठलभाई पटेल सभा-अध्यक्ष थे। इन्होंने स्वयं उसका विरोध किया। कुछ मास पश्चात् वह बिल संसद में रखा गया। इस अवसर पर विट्ठलभाई पटेल ने मेरठ की घटना पर ध्यान दिलाया और कहा कि यह बिल मेरठ की एक घटना के एक बिन्दु पर आधारित है तथा, क्या न्यायालय में अभियोग और बिल एक साथ रखे जा सकते हैं? इस तर्क के सामने अंग्रेज सरकार निरुत्तर हो गई। इससे सरकार की नैतिक हार हुई। 8 अप्रैल को असेम्बली में बमों का धमाका हुआ। सम्पूर्ण हाल धुएँ से भर गया। अंग्रेज होम मेम्बर जमीन पर लेट गए और अपने सर्वनाश के विषय में सोचने लगे। बमों के धमाके के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध नारे गूँज रहे थे।

भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त के शौर्यपूर्ण कार्यों से भारत का कोना-कोना निर्भीक हो गया था। वे मानवता के सन्त तथा शौर्य के समुद्र थे। उनके साहसपूर्ण बलिदान से भारतमाता का मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया था, लेकिन आँखें अश्रु से भीगी हुई थीं; क्योंकि दोनों वीर सेनानी स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर न्योछावर हो गए थे। अब आजाद के कन्धों पर स्वतन्त्रता का सम्पूर्ण भार आ गया था। स्वाभिमानी तथा देश के हित में लड़नेवाला वीर; विजय अथवा मृत्यु दोनों में से एक का ही वरण करता है।

तृतीय सर्ग {बलिदान}

प्रात:काल में चन्द्रशेखर 'आजाद' अपने मित्र रुद्र के साथ चिन्तामग्न बैठे हैं। आजाद कहते हैं कि हम कब तक गुलामखाने में बन्द रहेंगे। इस पर उनके मित्र समझाते हुए कहते हैं कि अँधेरा समाप्त होगा, लेकिन तुम स्वयं अपने को बचाए रखो तथा कुछ दिन अपनी गतिविधियाँ बन्द करो, तब अकस्मात् ही विस्फोट करना ठीक होगा। अंग्रेज तुम्हारे पराक्रम को देखते रह जाएँगे। इस वार्त्तालाप के मध्य ही सूर्य भी उदित हो आता है। सूर्य की लाली में आजाद का मुख और भी लाल हो गया। वे कहते हैं कि मैं अंग्रेजों पर शासन करके ही रहूँगा। मुझे सेना के युवकों को संगठित करना होगा। एक दिन आजाद फूलबाग की सभा में सशस्त्र क्रान्ति के विरुद्ध भाषण सुन रहे थे। वहीं पर खड़े विद्यार्थीजी ने उनके उत्तेजित मन को शान्त किया तथा कहा—"देख आजाद! नेता की अनजानी बातों को मत सुनना।" उन्हें भय था कि आजाद अभी सभा को भंग न कर दें। लेकिन उनका यह विचार केवल भ्रममात्र था। वे स्वतन्त्रता की लड़ाई के लिए शासन से अपने आपको सुरक्षित रखना चाहते थे। आजाद कहते हैं कि मैं प्रयाग में जवाहरलाल नेहरू से मिलना चाहता हूँ, कानपुर में पार्टी के संकट की दशा को देखना चाहता हूँ तब प्रयाग में इस संकट को दूर करने का उपाय सोचूँगा।

प्रयाग के उत्तरी भाग में वृक्षों के नीचे आजाद मित्रों से वार्त्तालाप कर रहे हैं। अल्फ्रेड पार्क के पास पुलिस की गाड़ी रुकी। आजाद ने भी मित्रों को विदा करके अपनी पिस्तौल में गोलियाँ भरीं तथा पुलिस से मोर्चा लिया। अपनी पिस्तौल की पहली गोली से उन्होंने एक देशी अफसर का जबड़ा तोड़ दिया। अंग्रेज एस० पी० नाटबावर इस दृश्य को देखता रह गया। तभी एस० पी० ने गोली चलाने के लिए वृक्ष की ओट ली। इस समय भारत की करोड़ों जनता का वह एकाकी सिपाही ही अंग्रेज सरकार का सामना कर रहा था। गोलियों की आवाज से सारा वातावरण गूँज उठा। एक घण्टे तक युद्ध चलता रहा। आजाद के पास जब अन्तिम गोली शेष रह गई तो वे असमंजस में पड़ गए कि कहीं पुलिस के हाथों पकड़ा न जाऊँ। अन्ततः कुछ क्षण पश्चात् आजाद ने वह गोली स्वयं ही अपनी कनपटी पर दाग ली। गोली लगने पर वीर आजाद धराशायी हो गए। उनकी इस साहसिक मृत्यु में भी अंग्रेज अफसर नाटबावर को सन्देह था। उसने जमीन पर गोली चलाकर यह जानना चाहा कि आजाद मृत हैं अथवा जीवित। सम्पूर्ण जनता आजाद की मृत्यु की घटना को सुनकर रुदन कर रही थी। आजाद के साहस, आत्मबलिदान तथा शौर्य की स्मृति आज भी जनता के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना को प्रबल कर देती है। यही वह घटना है, जिसने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया। धन्य है, भारतमाता का वह सपूत, जिसने अपने प्राणपण से अपने 'आजाद' नाम की सार्थकता को बनाए रखा।